12 ज्योतिर्लिंग मंत्र

चार पंक्तियाँ, पाठ में लगभग चालीस सेकंड। पहली तीन में बारहों के नाम क्रम से आते हैं; चौथी फलश्रुति है — वह पंक्ति जो बताती है कि इस पाठ से क्या होता है।

वह श्लोक जो बारहों के नाम गिनाता है

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥

saurāṣṭre somanāthaṃ ca śrīśaile mallikārjunam |
ujjayinyāṃ mahākālam oṃkāram amaleśvaram ||

सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकाल, और नर्मदा पर ओंकार-अमलेश्वर।

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥

paralyāṃ vaidyanāthaṃ ca ḍākinyāṃ bhīmaśaṅkaram |
setubandhe tu rāmeśaṃ nāgeśaṃ dārukāvane ||

परली में वैद्यनाथ, डाकिनी में भीमशंकर, सेतुबंध पर रामेश्वर, और दारुकावन में नागेश।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥

vārāṇasyāṃ tu viśveśaṃ tryambakaṃ gautamītaṭe |
himālaye tu kedāraṃ ghuśmeśaṃ ca śivālaye ||

वाराणसी में विश्वेश, गौतमी (गोदावरी) के तट पर त्र्यंबक, हिमालय में केदार, और शिवालय में घुश्मेश।

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

etāni jyotirliṅgāni sāyaṃ prātaḥ paṭhennaraḥ |
saptajanmakṛtaṃ pāpaṃ smaraṇena vinaśyati ||

जो मनुष्य इन ज्योतिर्लिंगों का सायं और प्रातः पाठ करता है, उसके सात जन्मों के पाप स्मरण मात्र से नष्ट हो जाते हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र — हर धाम का अपना श्लोक

01 सोमनाथ

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

सौराष्ट्र के उज्ज्वल और अति रमणीय देश में, ज्योतिर्मय, चंद्रकला से सुशोभित, भक्ति देने के लिए कृपा करके अवतरित — उन सोमनाथ की शरण में मैं जाता हुँ।

02 मल्लिकार्जुन

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम् ॥ २॥

श्रीशैल के शिखर पर, विद्वानों से घिरे उस उन्नत पर्वत पर आनंदपूर्वक निवास करने वाले — संसार-सागर के सेतु, उन मल्लिकार्जुन को मैं नमन करता हुँ।

03 महाकालेश्वर

अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम् ॥ ३॥

अवंतिका (उज्जैन) में सज्जनों को मुक्ति देने के लिए और अकाल मृत्यु से रक्षा के लिए अवतार लेने वाले — उन महाकाल की मैं वंदना करता हुँ।

04 ओंकारेश्वर

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय ।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ४॥

कावेरी और नर्मदा के पवित्र संगम पर, सज्जनों को तारने के लिए मांधाता की नगरी में सदैव निवास करने वाले — उन ओंकारेश्वर शिव की मैं स्तुति करता हुँ।

05 वैद्यनाथ

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ ५॥

ईशान दिशा में, प्रज्वलित ज्योति के स्थान पर, गिरिजा सहित सदा निवास करने वाले, देवों और असुरों दोनों से पूजित चरण-कमलों वाले — उन श्री वैद्यनाथ को मैं नमन करता हुँ।

06 नागेश्वर

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ६॥

उस अति रमणीय नगर में, अनेक भोगों से विभूषित, भुक्ति और मुक्ति दोनों देने वाले एकमात्र ईश — उन श्री नागनाथ की शरण में मैं जाता हुँ।

07 केदारनाथ

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैर्यक्ष महोरगाढ्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ७॥

महापर्वत की ढाल पर विराजमान, मुनीन्द्रों द्वारा निरंतर पूजित, देव, असुर, यक्ष और महानागों से सेवित — उन केदारेश्वर शिव की मैं स्तुति करता हुँ।

08 त्र्यंबकेश्वर

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे ।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ ८॥

सह्याद्रि के निर्मल शिखर पर, गोदावरी के तट के पवित्र देश में निवास करने वाले, जिनके दर्शन से पाप शीघ्र नष्ट हो जाता है — उन त्र्यंबकेश्वर की मैं स्तुति करता हुँ।

09 रामनाथस्वामी

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसङ्ख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥ ९॥

ताम्रपर्णी के सागर-संगम पर, असंख्य बाणों से सेतु बाँधकर, श्रीरामचंद्र द्वारा समर्पित — उन रामेश्वर को मैं नित्य नमन करता हुँ।

10 भीमाशंकर

यं डाकिनिशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च ।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥ १०॥

डाकिनी और शाकिनी के समाज में सेवित, सदैव भीम आदि नाम से प्रसिद्ध — भक्तों का हित करने वाले उन शंकर को मैं नमन करता हुँ।

11 काशी विश्वनाथ

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ११॥

आनंदवन में आनंदपूर्वक निवास करने वाले, आनंद के मूल, पाप-समूह के नाशक, वाराणसी के नाथ और अनाथों के नाथ — उन श्री विश्वनाथ की शरण में मैं जाता हुँ।

12 घृष्णेश्वर

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये ॥ १२॥

इस रम्य और विशाल इलापुर (वेरूळ) में देदीप्यमान, जगत् के वरेण्य, अत्यंत उदार स्वभाव वाले — घृष्णेश्वर नाम से विख्यात उनकी मैं वंदना करता हुँ और शरण लेता हुँ।